समकालीन हिन्दी कविता में मुस्लिम कवयित्रियों की कविताओं में प्रतिरोध के स्वर का मूल्यांकन

डॉ. अजय कुमार शुक्ल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
कला एवं मानविकी संकाय
कलिंगा वि.वि. नया रायपुर (छ.ग.)

शोध सारांशः–

समकालीन हिन्दी कविता में मुस्लिम समाज की कवयित्रियों ने अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करायी है। सामाजिक वैषम्य और धार्मिक कट्टरता के विरूद्ध उनकी कविताओं में प्रतिरोध के स्वर को स्पष्ट महसूस किया जा सकता है। स्त्री जीवन के प्रामाणिक दस्तावेज स्त्रियों की रचनाओं में ही दिखलायी पड़ती है। जहाँ वह अपने भोगे हुए यथार्थ, अपने स्वप्न, अपनी महत्वाकांक्षाओं और अपनी पीड़ा को विश्वसनीयता के साथ व्यक्त करने में सफल रही हैं।

बीज शब्दः–

स्त्री, धर्म, मुस्लिम कवयित्री, समकालीन हिन्दी कविता, प्रतिरोध, व्यंग्य, असहमति, विद्रोह, बराबरी।

प्रस्तावनाः–

किसी भी देश का साहित्य, वहां के समय और समाज का सच्चा दस्तावेज होता है। समाज के यथार्थ को चित्रित करने में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतवर्ष की दूसरी सबसे बड़ी आबादी इस्लाम धर्म को मानने वालों की हैं। मुस्लिम समाज में भी पुरूष–स्त्री के समानता के तमाम दावों के विपरीत धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास, रूढ़िवादी परंपराओं और कुप्रथाओं की आड़ में महिलाओं के साथ भेदभाव कायम है। बदलते समय में शिक्षित मुस्लिम महिलाओं ने पितृसत्तात्मक सोच का पुरजोर तरीके से विरोध करते हुए अपनी आवाज बुलंद की है। हिन्दी साहित्य में समकालीन हिन्दी कविता में मुस्लिम समाज की कुछ कवयित्रियों ने जीवन के यथार्थ का चित्र अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। सिर्फ सामाजिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि स्त्री जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, उन्होंने अपनी मुखर अभिव्यक्ति को व्यक्त किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में समकालीन हिन्दी कविता में मुस्लिम कवयित्रियों की कविताओं में प्रतिरोध के स्वर का मूल्यांकन करने का प्रयास किया है।

धर्म और स्त्रीः–

भारतीय कानून तथा समाज में धार्मिक विविधता को मान्यता प्रदान की गइ। भारतीय समाज में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। धर्म हमें सदाचार, उदारता और समस्त प्राणियों के कल्याण की शिक्षा देता है। भारत में हिन्दू धर्म के बाद दूसरी सबसे बड़ी आबादी इस्लाम धर्म को मानने वालों की हैं। नर–नारी की समानता के संदर्भ में धार्मिक मान्यताओं की बात की जाए तो प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में स्त्री को पुरूष से श्रेष्ठ बताया गया है। मनु स्मृति में लिखा गया है कि– **''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता..।''** अर्थात् – ''जहां स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। जहां स्त्रियों की पूजा नहीं होती, उनका सम्मान नहीं होतां, वहां किए गए समस्त अच्छे कार्य निष्फल हो जाते हैं।''

इसी प्रकार इस्लाम धर्म में भी हजरत मोहम्मद स.अ.व. ने माँ और बेटियों के संबंध में फरमाया है– कि **''माँ के कदमों तले जन्नत है।''** जिस किसी के पास बेटियां अथवा बहने हो, उनके साथ अच्छा व्यवहार करेगें, तभी वह जन्नत में जाएगा।''

हिन्दू धर्म के वेद, पुराण, उपनिषद ग्रंथ हो या इस्लाम धर्म के पवित्र कुरान या हदीस, समस्त धार्मिक ग्रंथों में स्त्रियों के अधिकार एवं महत्व पर अनेक महत्वपूर्ण पंक्तियां अंकित है किंतु वास्तविकता के धरातल में सिर्फ हिन्दू–मुस्लिम धर्म ही नहीं बल्कि प्रत्येक धर्म की महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की है।

भारतीय समाज में भी स्त्रियों को पुरूषों की अपेक्षा बराबरी का स्थान नहीं मिल पाया है। पिछली कई सदियों से महिलाओं के साथ धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास, झूठे आंडबर और रूढ़िवादी पुरातन सोच की आड़ में समानता का अधिकार नहीं मिल पाया है। पितृसत्तात्मक समाज में, वह परंपराओं के संकीर्ण बंधनों से जकड़ी हुई दिखलाई पड़ती हैं। शिक्षा के प्रचार–प्रसार का असर 20वीं सदी से प्रारंभ होता है। 21वीं सदी में शिक्षित महिलाएं समाज की जड़तावादी सोच का दृढ़ता से मुकाबला करती है और अपनी प्रतिभा योग्यता और कर्मठता की बदौलत प्रत्येक क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाने के लिए प्रयासरत हैं।

हिन्दी साहित्य में महिलाओं की स्थिति और योगदानः–

हिन्दी साहित्य में उपलब्ध अधिकांश रचना–सामग्री स्त्रियों को केंद्र में रखकर लिखा गया है लेकिन स्त्रियों की दशा पर लिखने वाले रचनाकारों में पुरूष वर्ग का ही वर्चस्व रहा है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि स्त्री वर्ग में साहित्य सर्जन या काव्य–लेखन प्रतिभा नहीं होती है। बल्कि इसके पीछे सदियों से विद्यमान पितृसत्तात्मक व्यवस्था की जकड़न है। उन्हें शिक्षा से दूर रखा गया और चारदीवारी मैं कैद होने के लिए मजबूर किया गया। उसके बावजूद भी विश्व के अधिकांश लोकगीत गांव–घर की इन्हीं अनपढ़ महिलाओं की

देन हैं। हिन्दी साहित्य विशेषतौर से हिन्दी कविता के इतिहास का मूल्यांकन किया जाए तो आदिकालीन कविता में स्त्री का चित्रण युद्ध की प्रेरक तथा जीतने और भोग की वस्तु के रूप में चित्रित किया गया है। भक्तिकालीन कविता में उन्हे देवी तथा प्रेमिका के रूप में स्थापित किया गया है। छायावादी कविताओं में वह श्रद्धा, नीर भरी दुख की बदली, त्याग एवं समर्पण की मूर्ति दिखलायी पड़ती है।

आधुनिक काल में साठोत्तरी युग में स्त्री रचनाकारों का सार्थक हस्तक्षेप दिखलायी पड़ता है। जब वह सामाजिक मुद्दों पर एवं अपने अधिकारों को प्राप्त करने की आवाज उठाती हैं। 21वीं सदी तक दलित, आदिवासी के साथ स्त्री विमर्श भी चर्चा का केंद्र रहा है। जहां किसी धर्म विशेष की नहीं बल्कि संपूर्ण स्त्री समाज की रचनाकार मुखर अभिव्यक्ति के साथ समकालीन काव्य परिदृश्य में अपनी उपस्थिति का एहसास कराती है।

समकालीन हिन्दी कविता में मुस्लिम कवयित्रीः–

आज की मुस्लिम कवयित्रियां साहित्य में बराबरी का दखल दे रही है। वे तीखे सवालों को पूछने में हिचकिचाती नहीं है। अपनी कविताओं के माध्यम से पुरूष सत्ता प्रधान समाज पर तीखा व्यंग करती हैं। जो आज के पहले संभव नहीं हो पाया था। आज मुस्लिम कवयित्रियां स्वयं को उपभोग करने वाली सामग्री मानने से इंकार करती हैं। वह जानना चाहती हैं कि शरीर की पवित्रता के सारे प्रमाणपत्र उसी से क्यों मांगे जाते हैं। वह आक्रोशित होकर कहती हैं कि–

''हम नहीं पूछेंगे/खुदा से भी नहीं/शुचिता की सभी परिभाषाएं/पवित्रता के सारे प्रमाण पत्र/हमारे ही शरीर पर आकर क्यों रूके रहे/क्यों, हमारे विचार कूड़े की तरह कूड़ेदान में फेंके गए...।''

(अल्लाह कसम – नाजिश अंसारी)

इस 'क्यों' में स्त्री के भीतर की समस्त पीड़ा दिखलायी पड़ती है। स्त्री होने के तथाकथित गुनाह स्वरूप उस पर जो पाबंदियां लगायी गई है। उनके विरूद्ध न पूछने के बावजूद भी वह समाज से जवाब चाहती हैं।

वर्तमान समय में मुस्लिम कवयित्री भी समाज में समानता का वास्तविक अधिकार चाहती हैं। वह इस सत्य से परिचित है कि उपभोगवादी समाज में स्त्रियों को वस्तु के रूप में समझा गया है। उन्हें अपनी देह पर भी अधिकार नहीं है। जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में पिता, पति और पुत्र उनके ऊपर अधिकार जताते हैं। उनके जीवन के तमाम फैसले वहीं लेते हैं। इसलिए वह रोष भरे शब्दों से कहती है–

''मुझे छुट्टी चाहिए/मैं नहीं होना चाहती बेटी/मां भी नहीं/पत्नी तो बिल्कुल भी नहीं/मुझे मेरे होने की छुट्टी चाहिए....।

(बहरहाल–नाजिश अंसारी)

स्त्री का संपूर्ण जीवन अपने घर–परिवार को संभालने में व्यतीत हो जाता है। उनके सपने, उनकी चाहत और उनकी उन्मुक्त उड़ान पर तमाम बंदिशे हैं। वह समस्त बंधनों को तोड़कर समाज में अपने लिए बराबरी का अधिकार चाहती है। कहा जाता है कि पुरूष और स्त्री दोनों गृहस्थी रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं किंतु पुरूष वर्ग की अपेक्षा महिला वर्ग ही परंपराओं के बोझ में ज्यादा दबी हुई हैं। इज्जत रूपी बेड़ियों से सदैव उसे जकड़ा गया है। तमाम लांछन उन्ही के हिस्से में आते है–

''...वस्त्रों से कई–कई गुना/लांछन पहनती स्त्रियां/बिंदी माथे पर सजा/दुख की लकीरों को/चेहरे की लकीरों में छुपाती स्त्रियाँ/सीवन उघड़ी और फीकी पड़ती उम्मीदों को पुराने किले में कैद करती.... शिकार और चाहत में घुली कड़वाहट को निगलने की कोशिश करती है स्त्रियाँ....।''

(तुममें खिलती स्त्रियाँ–वाजदा खान)

वाजदा खान की कविता ''कहो दुख'' में स्त्री जीवन की पीड़ा स्पष्ट रूप से दिखलायी पड़ती है। जो उसके शरीर में एकाकार हो गया है। वह उसे मिटाकर हँसने की बात करती है–

''कहो दुख/मैं वो लिखी इबारत मिटा दूं/जो तुमने रूह की जिस्म पर/उकेरी थी/....तुम अपनी ड्यूटी पर थे/पीछे हटना तुम्हें गंवारा नहीं था/नागवार था मुझे तुम्हारा रहना/लेकिन तुम न माने अमिट/मिटा रही हूं अब उन्हें सदियों से/....मेरे सामने खड़े हो जाओ/कम से कम/पूछ तो सकूंगी तुमसे/कैसे हो दुख? अब तो थोड़ा मुझे हंसने दो।''

(कहो दुःख–वाजदा खान)

मुस्लिम कवयित्रियों की भाषा में रोष, आक्रोश एवं दुख का स्वर दिखलायी पड़ता है क्योंकि उन्होंने जीवन में बहुत कठोर समय का सामना किया है। स्त्री पर हो रहे शोषण से दुखी होकर वह सख्त भाषा में प्रहार करती हैं–

''हम अकेले आसमान में नहीं उड़ना चाहती/हम उड़ना चाहती है तो/ये चाहत भी पालती हैं/कि तुम साथ उड़ो/क्या, हम शर्मिंदा हो अपनी चाहत पर/या कि इस सोच पर/कि इससे पहले हम/पत्थर की क्यू ंना हुई/या खुदा तूने हमें क्यूँ बनाया/गर बनाया भी तो इस जहान में भेजा क्यूं/तमाम संवेदनाओं में रंगकर/हम शर्मिंदा हैं....।''

(हम पत्थर की क्यूं न हूई?–वाजदा खान)

समकालीन हिन्दी कविता में स्त्रियां, अपनी कविताओं में स्वयं को रच रही हैं। सदियों से दासत्व की मुक्ति की छटपटाहट उनकी कविताओं में स्पष्ट रूप से दिखलायी पड़ती हैं। अब वह चिड़ियां और पिंजरा के प्रतीकों का पहचानने लगी हैं–

''बच गई शिकार होने से/खुश है चिड़ियां/अब उड़ने की ख्वाहिश पर कब्जा है। बहेलिए का/....चिड़ियां के लिए आजादी का अर्थ हैं पिंजरा।''

(आजादी–शहनाज इमरानी)

शहनाज इमरानी की कविताओं में महिलाओं के हक को किताबी बातें बताया गया हैं। वह अपनी कविताओं के माध्यम से वास्तविकता की तस्वीरों को प्रस्तुत करती हैं–

''तुम्हारा परिचय भी हुआ होगा। हिंसा, उत्पीड़न, यातना, अपमान शब्दों से/मौलवियों और उलेमाओं की इस दुनिया में/रोने पर पाबन्दी है/और जोर से हंसना मना है/तब लीग करने वाले सिर्फ फर्ज बताते है/और हक सिर्फ किताबों में लिखे जाते हैं।''

(उम्र बीस साल–शहनाज इमरानी)

इक्कीसवीं सदी की मुस्लिम कवयित्रियों के पास बहुत सारे सवाल–जवाब हैं। वह इन सवाल–जवाबों की हकीकत समझती हैं–

'बहुत से सवालों के/जवाब गुम हैं/बहुत से जवाबों के सवाल गुम हैं/बहुत सी हथेलियों की गुम हैं रेखाएं/बहुत सी रेखाओं के हाल गुम हैं।''

(बहुत से–रेणु हुसैन)

हथेली में रेखाओं के गुम होने पर उन्हें अचरज नही है। उनके अंदर भी प्रत्येक क्षण दर्द टीसता रहता है लेकिन वह इस दर्द को अपनी ताकत बना लेती है–

''इस दर्द का क्या करूं? जो कभी मुहब्बत बनकर पिघल रहा है। और कभी विद्रोही की ज्वाला–सा लाल हो रहा है। उस दर्द को/धुंए में उड़ा दूं/आँखो से बहा दूँ/या होंठो पे सजा लूँ।''

(वो जो रिस रहा है दर्द का टुकड़ा–रेणु हुसैन)

जीवन में सुख–दुख है। प्रेम हैं, अभिलाषाएं हैं। फिर भी उम्र भर के लिए एक 'आह' को अपना मुकद्दर मान लेती हैं। बेशुमार सवालों के बीच जवाब गुमशुदा हो जाते हैं। तब वह कहती हैं–

''सवाल बेशुमार है, जवाब सारे गुमशुदा/सादा सफह है जिस्म का/और मुहब्बत की तकमील पर/रद्द की मुहर है।''

(मुझ पर मुहब्बत के राज ऐसे ही खुलने थे–कायनात)

वर्तमान काव्य परिदृश्य में मुस्लिम कवयित्रियों ने छायावादी प्रतिमानो का ध्वस्त कर खुद को रचा है। वह कोमलता, भोग और सौंदर्य की वस्तु नहीं है। पुरूष के यौन इच्छाओं

की पूर्ति के लिए कठपुतली नहीं है। वह पुरूषसत्तात्मक समाज के द्वारा गढ़े हुए मिथ को तोड़ती है और अपनी कविताओं के माध्यम से वास्तविकता को उजागर करती हैं–

''आप गुलाब कहते हैं जिन्हें/वे उग ही आनी है हर बार बिना खाद–पानी और देखभाल के/वे बचा लेती हैं खुद को अल्ट्रासाउंड की पराबैगनी किरणों से/गर्भपात के तमाम हथकंडे झूठलाकर/वे जन्म ले ही लेती हैं/समूची–सही–सलामत..... ।''

(आप गुलाब कहते हैं जिन्हे–नाजिश अंसारी)

नाजिश अंसारी ने स्त्री जीवन के चित्रों को सूक्ष्मता से अभिव्यक्त किया है। उनकी कविताओं में स्त्री जीवन की बेबसी, घुटन और सिसकियां सुनाई पड़ती हैं–

''वे ढूंढ–ढूढ़ कर/उचक–उचक कर/छुड़ाती हैं जाले/साफ करती है बेसिन–पाखाने/रसोई की नालियां/वहाँ सड़क पर फाड़ दी जाती है उनकी इज्जत/मर्दों के बहाने पड़ती हैं उन्हें गालियां/फिर भी वे ओढ़े रहती है होंठो पर/ठंड की धूप सी झूठी मुस्कान/शायद सब पेट से ही सीख कर आती हैं ऐसी जादूगरी.... ।''

(जिन्हें गुलाब कहते हैं आप–नाजिश अंसारी)

वास्तविकता यह है कि स्त्रियों के लिए सामाजिक बेड़ियों को तोड़ना कभी भी आसान नहीं होता है। स्त्री को कभी मर्यादा (पुरूष की मर्जी) के नाम पर तो कभी इज्जत (परिवार के सम्मान) के नाम पर अपनी उड़ान पर बंदिश लगाना पड़ता है। इस पितृसत्तात्मक समाज ने उसके पंख कतर लिए हैं–

''आपने काट दिए थे हमारे डैने/''मुझे चांद चाहिए'' कहने से पहले/हमने देखना चाहा आकाश/आपने दिखा दी मंडराती हुई चीलें/फिर घुसेड़ दिया घर के भीतर वाले सबसे अंधेरे कमरे में/जो सड़ांध मारती आजादी की कब्र पर खड़ा था।''

(अल्लाह कसम–नाजिश अंसारी)

खराब से खराब समय में मुस्लिम कवयित्रियों की रचनाओं में सुखांत के लिए छटपटाहट है। सही मायनों में कहाँ जाए तो इस विषम परिस्थिति, अमानवीयता और क्रूरता जैसे क्षण में सुख कहीं दिखलायी नहीं पड़ता है। किन्तु अपनी कल्पना और सकारात्मक सोच रखने वाली एक स्त्री ही हो सकती है। जो कठिन से कठिन समय में भी उम्मीद जगाए रखती है–

''आजाद तो वह भी हैं/जिनके सपने अनवरत् टूटते रहे/और नये सपने देखते हुए/हर दिन घूँट–घूँट/अपने आँसू पीते हुए/पुण्य कमाते हैं..... ।''

(आजादी–जेन्नी शबनम)

निष्कर्षः–

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि मनुष्य होने के नाते, शोषण से मुक्ति की आकांक्षा स्त्री की चेतना में हमेशा से रही है। समकालीन मुस्लिम कवयित्रियों ने सामाजिक भेदभाव को पहचान कर अपनी कविताओं के माध्यम से उस पर तीखा प्रतिरोध किया है। उन्होंने अपनी कविताओं के जरिए सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति दी है। गाँव – कस्बों में स्त्री का जीवन आज भी जंजीरों से जकड़ा हुआ है। समकालीन मुस्लिम कवयित्रियों ने उनके मुक्ति की पुकार को अपनी कविता का मुख्य स्वर बनाया है। आने वाले समय में उन्हे साहस और मनोबल की जरूरत होगी जिससे वह सभी चुनौतियों का डट कर मुकाबला करें तभी हिन्दी कविता की परंपरा आगे बढ़ेगी और हिन्दी साहित्य समृद्ध होगा।

संदर्भ सूचीः–

1. स्त्रीः संस्कृति और स्वाधीनता – सुधा सिंह (आजकल – मार्च 2021/पृ. – 08)
2. लगातार ध्यान खींचती युवा कवयित्रियाँ – विमल कुमार (जनसंदेश टाइम्स – 11 सितंबर 2021/पृ. – 06)
3. समकालीन महिला काव्य लेखन, स्त्री छविः मिथक और यथार्थ दिविक रमेश – (HTTPS//VISHWAHINDIJAN.BLOGSPOT.COM 20 जनवरी 2021.)
4. समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री – प्रभा दीक्षित – (DESHBANDHU.COM.IN – 7 मार्च 2011)
5. कविता में स्त्री और स्त्रियों की कविता – प्रकाश चंद्र (स्त्रीकाल – 14 अगस्त 2017)
6. हिन्दवी – HTTPS://WWW.HINDI.ORG
7. कविताकोश – HTTPS://KAVITAKOSH.ORG
8. 21 वीं सदी की कवयित्रियों के काव्य में स्त्री विमर्श – हरकीरत कौर – (HTTPS://VISHWAHINDIJAN.BLOGSPOT.COM 20 जनवरी 2021)
9. इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में मुस्लिम कवयित्रियों की कविताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन – डॉ. अजय कुमार शुक्ल और ताहिरा बेगम, आई.जे.आर. एस.सी. (7 अक्टूबर 2021), ISSN : 2395-6011.
10. लाईट ऑफ इस्लाम – अनसार अली खान 16 मार्च 2021.